

DPN 6289

Title : देगुडि पूजा ^{विधि} DE GUDI PŪJĀ VIDHI

Run. No. 6980

Cat. No. 29

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. ✓ New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 21 x 10

Folios 23

Lines (in a page) 18 irregular

✓ Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Shree Natha

Author / translator

Scribe / donor

श्रीनाथ / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 953

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper ✓ / thyasaphu /

Condition : fine ✓ / damaged ✓ by worms, rats, water ✓ /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री गणेशाय ॥ देगुडि पूजा विधिः ॥ यजमानाचम्या चन्दन पुष्प भूषणं ॥ ॥

15
△ इति श्री देव्याः प्रतिवार्षिकं हेमजाती पुष्पारोहन पूजाविधिस्तमाहृतम् ॥

सं ९५३ मिति आश्विन कृष्ण पञ्चमी शनैश्चरवार च कुन्द वरा श्याम-
सुन्दरन पद्मति दयका तवङ्गलि स्वयाओ श्रीनाथन चोमा जुल ॥ शुभ ॥

२१२७ ६८ ५ मे



खदगपु २

[illegible]

असिमारखलशादेवध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यजमाना कन्या ॥
चन्दनपूज्यस्तु वन ॥ ॥ चन्द
नादकन्यैव्यज्जलं गृहीत्वा स्तु
त्यो धी ॥ ॥ त्रयादि ॥ यज
मानस्य सयत्रिदात्र स्य श्री ३
स्वष्टुदवैका सूपीति कामन
यापुति वार्षिके दमजानी
पूष्यावने हन्या सदा वि
वपूजा कर्तुं श्री सूर्याया धी
नमः ॥ पूष्ये नमः ॥ धूपं श
पूष्या रात्रि कर्म पुन हस्त न
स्वष्टुग ॥ ॐ नमः शिवाय
त्रयादि ॥ सिद्धि न कुत्रि या न
म् ॥ यजन स्थिति ॥ पूष्या
जनै नमस्तुता मि ॥ श्री
पूजा ॥ स्नान ॥ गंगमया सध

गंलुष्टं नानायाय पुनाय कं।
 पुनं वृत्त्याय युक्ता नी साना
 र्थं न युक्तं व्यतीतं ॥ **इध**
नानी ॥ उ। मधी वृत्त्याय पुनाय
 दिव्यं त्रिदं सर्वं कं। यथा ध
 सत्यविगुनं दीन सान पुना
 किं न ॥ **दधि** ॥ एम छव ता
 सादधिं पूर्य उ मा यति यज
 छव नः ॥ न द ध्ना स्या यथा मि
 त्वा सर्वपाप द्वा यार्थ कं ॥
धुन ॥ कपिलाया धुनं लुष्टं
 नृणां वच यदुह वं। रा सन्त
 द वता सर्व साना यार्थ न पुना
 किं न ॥ **मधु** ॥ मधु मदि
 क स रू गं न वधि नृप माद
 कं। यथा ध वता सना यत्वं म
 धु सान पुना मि न ॥ **सु**
कं ॥ सान पु च सम रू गं

मर्कता गू उ स्वाद कं। कामि पु
 राम पापार्थं न सान नो कया
 म्पदं ॥ **त्रिलिखान** ॥ सूना
 कि मि वा मां स न स मा न सम
 रुमं। अदि सिद्धि नृप पत्थं
 त्रिलिखान द दामि न ॥ **पू**
नजाली ॥ **चन्दन** ॥ ॐ दं म
 लय मरु गं चन्दनं हि मणी
 गली। वीन जादु गुडि नृ नृ
 हा ली म म मि दु य ॥ **सिन्धु**
नी ॥ पूर्य व द नृ दं नृ स्य ला
 क न वीन रू य लं। गृहा ली वी
 न वीन नृ सिन्धु न व र्ज दा य
 कं ॥ **दधि** ॥ स्वर्ग म रू
 वया गाल च उ दं म म रू मि
 धु। दिव्य च द रू लं द हि द
 सी दं लो क या मि न ॥ **ज**
जमका ॥ उ य वी न मि दं द

वमत्रुदंगस्यलंकुर्न। गृहल
 वीत्रयोगसहलंकुर्न। चकन
 म॥ ॥ **त्रुजीलस्यनत्रादिन**
स्वानजानकाओगय॥ त्रुया
 दिवाय॥ श्रीसदाशिवरुदान
 कायहमजातीयथावगाह
 नमूमूकूमम॥ **स्वानशुय**
 क॥ **मालीनानाविधं** चिपुं व
 लंसोतयेनिकुं न। **चलापूला**
 समकयेवगृहात्मनरुलाफ
 य॥ ॥ **चरुमा** ॥ **कुरुषुको**
 रुवंकुं विनामसिसमूत्र
 म। **मन्यामन्यादिकदवर्सापु**
 नपुगिगृष्टगी॥ ॥ **कलूपका**
 क॥ **कलूप** ॥ **यगलैवेवपका**
 कावर्षसंयुगी। **दिव्यभगुरु**
 लंदहिगृहात्मनममयनः॥ ॥
यक्षपका ॥ **यगाकार्यचवर्ष**
नयक्षगत्यात्मकयगीयशुव

नरुलंगत्वं यो कयामियप्रवत्र
 ॥ ॥ **त्रुदवा** ॥ **स्त्रुनलिनमि**
 यादक॥ **स्त्रुमनलं** वगाच
 केहानिरुवस्थात्रुनलो
 रुयानिच॥ ॥ **हानेनमाल**
कायक॥ **यूट्वासन** वायास
 वीसिद्धिकर्तृपार्कसर्वपायक
 यार्थकी। **सर्वदायक** यथा निर्धी
 तवासंगृहात्मम॥ ॥ **तायहा**
 पुदययामिदवमलाजाचमृष्टि
 नासहा। **तायपाफिरुलंद** हिगृ
 हात्मयत्रममयन॥ ॥ **राजमज**
तय॥ **रुलपकान्न** आदि॥ **रुलं**
रुलानिगाम्यलंद अमिं वीरु
 पुनर्क। **रुदकैलादिकं** सर्वरु
 लानियुगिगृष्टगी॥ ॥ **समय**
नेवय॥ **त्रुनमहाज** सदिर्वीत्र
 पुः वरुः समन्विती। **तदन्तंगृष्ट**
 तीदवनेवेष्टयुगिगृष्टगी॥ ॥
यय॥ **साया** संहसंवेववृत्ता

10

90

कृपाशायनमः॥ॐ कौंनन्दिन
 नमः॥ॐ कौंनन्दिन नमः॥ॐ कौं
 महाकालायनमः॥ पूनर्वकु
 पूजा॥ॐ कौं सधाकाशायनमः॥
 ॐ कौं वामदेवायनमः॥ॐ कौं
 न्धाशायनमः॥ॐ कौं तत्पुत्र
 वायनमः॥ॐ कः॥ॐ नाना
 नमः॥ ॥ धूपदीपे॥ मूलन
 जय॥ ॥ ॐ नमः॥ मिवाय
 सुधाकाशायनमः॥ कृष्णवद
 नमः॥ कामपुदः॥ भृंगमल
 लिलिगं सुसोमवदनं श्री वा
 मदवाङ्मनः॥ धात्रे धात्रे कला
 न्धात्रे वदनं धात्रे मुखं दक्षि
 णं॥ पूष्टं तत्पुत्रं धात्रे मुखं दक्षि
 दनं वृक्षं नुखागच्छतः॥ ॐ
 माकपुदं सुखात्रे वदनं नमः॥
 नमिर्वक्ष्यते॥ पातालव
 नहाटं कच्छत्रं मुखं नागं नु
 संपूजितं॥ कृपाशायनमः॥ यज

मानसमयनिवात्रकस्य श्री ३
 स्वदेवतासूयानिका मनसा
 पुनिवारिकहेमजातिपुष्पाव
 नाहनश्रीसदाभिवार्चनेविद्य
 स्तुतवैविधियनिपूर्वमस्तु॥ ॥
 नाम॥ ॥ नमः॥ निमलं चक्षुष
 जा॥ ॥ ॐ कौं वामदेवायनमः॥
 ल्यामिनीसहितायनमः॥ सह
 नमः॥ ॥ यजमानाय नमः॥ ॥ ॐ
 श्रीनिवात्रका॥ ॥ ॥ ॥

१ॐ नमः॥ श्रीचलिकाये॥ नृपदेवा
 चने॥ यजमानाय नमः॥ चन्दनपुष्प
 रसदी॥ चन्दनाक्षरपुष्पकुलंग
 हीत्वासूयार्घ्यं॥ नृयादि॥ यजमा
 नस्यमयनिवात्रकस्य श्री ३ स्वदे
 वतासूयानिका मनसा पुनि
 वारिकहेमजातीयपुष्पावनाह
 नश्रीस्वदेवतासेवागुवलिस
 हितयेनायनायनाककुंभीस

मि का र्थां हूं ॥ कौं कनिष्ठा
 र्थां वीषट् ॥ नुं कन गले च
 कौ र्थां रुट् ॥ हृदयादि ॥
 हृदया येन मः ॥ कौं भिन
 म स्वाहा ॥ श्रीं निरवाये वष
 ट् ॥ कौं कवचाय हूं ॥ कौं न
 नुं गु र्थाय वीषट् ॥ नुं न
 म्नाय रुट् ॥ ॥ उत्तमाय
 वृजा ॥ नुं जे म्नी नानन्द
 हाकिरे नवा ॥ नन्दवी
 नाधियगय ॥ नुं क
 लयागुरु दानका ॥
 यथा इकां पूजया मि ॥
 हृदयादि ॥ न्नावाहना ॥ दि
 चन्द नाक गय र्थं मः ॥
 यानिमूलाध नु मूदा ॥ हृ
 ठुधि ॥ न्नाय पूजा ॥
 नुं जवां वी र्वा ॥ श्रीं वीर
 ॥

वीरवीया इकां पूजया मित्रा
 तनं ध्यानं यथैव नमः ॥ ॥
 माहनीरु यथैव नुं ॥ प्रियलि
 ॥ नुं वां वटुकनाथं यं हूं देव
 लिंगं कुरु स्वाहा ॥ नुं गमं कुरु
 गच्छाम यं हूं देव लिंगं कुरु
 स्वाहा ॥ नुं कां कुरु पात्याय हूं
 देव लिंगं कुरु स्वाहा ॥ जय ॥ द
 धु गऊ खड्ग मूडी ॥ कौं ॥
 धूप चाय ॥ नुं श्रीं सुन्दरी ॥ मा
 सिनीय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ श्रीं गुरुदेवाय नमः ॥ जय त्वं मा
 लिनो देवो निर्मल मल नाशिनो ॥
 नवाकिः पुरुषो वीरु विस्तीर्णक व
 द्दिनो ॥ जननी सर्वरुतानी स माय
 मि नु वं वल्लि तामा गोवी नावनी
 दवी का प्रवृत्त प्रवत्सव ॥ जयति
 यत्र मगलं निधील स रूपा गऊ ॥

20

15

10

5

सुविद्य। आगविद्या वृत्ताहासिदि
 मेलुके काल काया लेकः॥ दिव्य
 चम्पानिद्रुममनमस्काय उंका
 नः साहास्यधकात्रवेषटवसा
 कात्रक कात्रक कात्रका गोश्रम
 मेचमनुदना चो निरिर्वमस्त
 स्मिन् ॥ अकसूपावली जायिदिः
 साधकैः दृष्टकैः साहसिन्मधुर्ल
 दीति मे आगिदि अगिनी वन्दम
 लायकैः ॥ नृपकी जयसेः पूज्यस
 आगिनी नाम आगसिद्धिप्रद। द
 विनीय द्रव्येण यमेली चनेः स्त
 हपूर्वमुमीयध्वस। गस्यदिव्या
 कत्रिदस्मिन् सफजातालसीर
 चनी सिद्धिप्रदा हतावतु ग। रु
 किगायः य ८० दृष्टुके प्रककाले
 द्विकाले गिकाले च उद्य ३३ म
 कजादी मुविः संस्तप्रयः सुदाभा
 नृवः ॥ सावित्री प्रगिठ साधु वयं
 वीता एव सं प्रकमद विप्रान्

नागास्तहा लक्ष्मीप्रद। इमचोभा
 न्यदात्रानुभवे कथं वृत्तपुणा
 महादासदृष्टा विमया निरीस
 यदेवी चोदी यमखेयुर्लचिदा
 नृकार्त्त। सुत्रदिव्य मासिवासे
 र्मुल्लोद्य भूगभुक्तलं प्रविष्ट
 धादृष्टे चने नृगया ले मुकु
 वध्यादागले मवित्ते नम म
 कीर्तनादवि। प्रया निधाने म
 व्याधिरिः संस्त ग्यादा प्रविन्द
 यान्ममहा कालिका लामि गऊः
 पुनः स्तने एण वन्दवृक्षदुचडा
 कयैय्या श्रुधर्मो सिमाला लि सत्य
 अकिंजल्के ससिंजल्। सर्ववीना
 सिर्कले गवीर्मे प्रवक्तव्य गल
 गता हं दमस्तो यत्रा धं दमस्त
 यत्रा धं भिदा ॥ पुर्वमुक्ता महादे
 वी से गवल मदा स्तना गता लि
 गं विनिर्लिङ्ग निर्गता यत्र मध्य
 नी ॥ यदकत्र यत्रि गुप्त माग्री कीर्त
 यत्र हं वं ॥ केतु महासिध्दा वि

5

10

15

20

15

10

5

[illegible]

यागः चानयनं कूलपर्वणा ॥
 द्विद्वयकविष्टेयकचित्तोद्दे
 नगवला ॥ कचित्तु अकचित्तु
 ल्यस्य नुक्तुयवकता ॥ अना
 मरुतलेयुका उत एतद्विस्त
 रिता ॥ या अमरुतधनादवीवने
 दारययातिका ॥ सव्यहस्तध
 तं वपुं गेला अकुरुका न के वा
 मखट्टाक्षमस्युग्रं दक्षिणमूल
 म्भुक्तं ॥ नयनं च वक्त्रं च दंष्ट्रं
 जायत्रिधुत्रिती ॥ सव्यहस्तसकं
 म्भवे मूर्ध्नि लभति तस्य नुक्तं ॥ वा
 मशुकलं म्भदि त्वं मस्तनलेषु
 दीधकं ॥ नवायुग्यं गितादवीसि
 द्विलक्ष्मी जययुता ॥ नुं डीं डीं उं
 डीं हं हं डुं डीं डीं नमः ॥ श्रीसि
 द्विलक्ष्मी दयै ध्यानयुता नमः ॥
 ॥ नुं यायादि ॥ मूलं न च अ
 लि ॥ श्रीसिद्विलक्ष्मी दयै नमः
 लियर्थं या इका पूजयायि ॥ ३ ॥

ॐ नमः सर्वसिद्धिदायिनी श्रीगणेशाय नमः
 सर्वसिद्धिमाप्नुयान्मां नमः
 दिगन्तये नन्दितायै सकलक
 लेशकनायै कार्यलग्नयै च
 लुकायै लियै तथै ॐ ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं ह्रीं नमः ॐ यत्र महसि नि
 निर्वर्तमानं देवीयमाय प्रव
 यत्यमनिसकल इति तानि ह
 र्कृष्णदत्तानि सद्यो यदीकाधि
 गन्तव्यसकल अष्टयुग्मं यानि
 दत्तानि गच्छन्तु सर्ववर्त्तमान
 नानाधिगच्छन्तु सर्ववर्त्तमान
 अर्जुनस्य रत्नाकरिण्यै न
 रिन्दिरत्नैः न तां यत्तु द
 मरगावशावनामसकलमना
 यथा न साधयन्तु मकात्र
 लिङ्गगवनि महास्रगवत्प
 ध्मत्रिलिङ्गावनामिह सक
 लमनुमातः यत्तु न वत्स
 लं दत्तमहाकालाणि निर्वर्त्त

हूं प्रसीद मदनो उनीक नर सुभा
 सुन वन्य कीर्ती श्री हूं हूं हूं
 हूं हूं हूं श्री श्री महा सिद्धि ल
 श्री देवी श्री पाद की पूजा यामि
 ॐ देवलिंग नमः स्वाहा ॥ ॥
 नमः पूजनी ॥ नूं कीर्ती श्री भामा न
 म्वा पाद ॥ नूं ३ वक्ष नमः श्री
 पाद ॥ नूं ३ वक्ष नमः श्री पाद
 ॥ नूं ३ वक्ष नमः श्री पाद ॥ नूं ३
 न विष्णु नमः श्री पाद ॥ नूं ३ वि
 नमः श्री पाद ॥ ॐ देवलि
 नमः स्वाहा ॥ नूं कीर्ती श्री हूं हूं
 श्री श्री महा विद्या नमः श्री
 श्री श्री सिद्धि लकी दे
 श्री श्री पाद की पूजा यामि
 ॥ ॐ देव ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नमः नमः ॥ नूं ३ वक्ष नमः श्री
 नमः ॥ नूं ३ वक्ष नमः श्री
 ॐ देवलिंग नमः स्वाहा ॥ ॥

10

10

लामपाप॥ ॐ देवलिं ॥ ॥
 वरुका॥ उं मयूनासनायपाप॥
 उं जयां डी वरुका नाथपाप॥
 ॥ ॐ उं जयि ॥ ॐ देवलिं ॥ ॥
 सिद्धिं नमः ॥ उं श्रीं श्रीः श्रीं श्रीं
 श्रीं श्रीं सर्वसौख्यं ॥ ॐ उं
 उनीयुनमन्दयामि पाप
 ॥ ॐ देवलिं गुरुस्वाहा ॥
 सप्तपूजा ॥ उं नमः कामाय
 धिने जीवीयानमः ॥ उं नमः
 कामाय नमः ॥ उं वी ॥ उं वलिं
 उं कामाय ॥ उं हनुमन्नाथ ॥ उं
 विभीषणाय ॥ उं कृपाय ॥
 य ॥ उं जनकनामाय ॥ उं मा
 र्गलुसाय ॥ ॐ देवलिं गुरु
 स्वाहा ॥ ॥ माहनीपूजा ॥ उं सर्व
 सर्वजनमाहन्त्याय ॥ ३ ॥
 उं जयाय ॥ उं विजयाय ॥ उं
 नृजिनाय ॥ उं नृयनाजिनाय
 ॥ उं कुरुने ॥ उं कुरुने ॥

उं माहने ॥ उं नृकय ॥ उं सर्व
 जनमाहने ॥ ॐ देवलिं गुरुस्वा
 हा ॥ ॥ ॥ ॥

धनधान्यद्वयमासकहिना
 वलिममर्तय ॥ ॥ पुनर्मन्द
 वीरपूजायाम् ॥ उं नमः नमः
 उं उं वलिं नमः ॥ ॐ देवलिं गुरु
 दा नमः ॥ माहनीयः ॥ नमः
 नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ देवलिं गुरु
 स्वाहा ॥ उं नमः ॥ नमः ॥
 किल नवान् ॥ नमः ॥ नमः ॥
 यगयथा स्व ॥ ॐ देवलिं गुरु
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 श्रीस्वस्त्यै नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 पादकीर्तयामि ॥ ॐ देवलिं गुरु
 गुरुस्वाहा ॥ विन्दुये ॥ ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

उया लाय वा पूजा हूँ देवलिग
 कर स्वाहा ॥ नैजं कीं देवी पूजव
 टुकनाथ कथिल ऊठा रात्र सासु
 नरिज गुहा ला मुख नैव तत्र
 प्रकृति रुग वनमलुल मलय
 थय यै नाना बलि गुरु करवां वि
 नार्थ दद सुम कं कं कं रुट्ठा
 हा ॥ नैजं हूँ देव स्वा ना धिप न
 यं यथ ना नैव तत्र मलुल
 मलय नैव तत्र रचुर्कुज वि
 नय का अख द्वा प्रख फलुट
 कलुल या लय म हा क थाल
 माला रत्र लय वि द्वा टि
 सम पुरु पुष्टि रुग वन
 रत्र वन यै न यथ यै ना
 नैवलि गुरु कर म वि द्वा
 का दय जां कीं कं रुट्ठा
 हा ॥ ॥ नैजं यं कं वि न यै

मिनी नीं पीर जा देव जा सह
 जा योग जा गुरु जा कल जा स
 न्दाह जा अं कं वि न यै मिनी
 नीं ख चनी हू चनी उम चनी उ
 का दनी द्वा देनी य दनी चरु
 य अं कनी न वा दनी लीं वि
 जग द्वा र नी नीं यथ यै ना
 नी वलि गुरु कर म म सिद्धि क
 र्च रु स्वा हा ॥ ॥ नैजं यै व
 श्री सिद्धि चामु लु यै वलि गुरु
 कर स्वा हा ॥ ॥ नैजं मं गी
 गं गः लै श्री कल ग लै ल
 य वलि गुरु कर स्वा हा ॥ ॥ नैजं
 जां कीं कीं कं रुट्ठा य दना दस
 रुगा य वं ना लो देव या ल काः ॥
 जा किली चरु थ माला पूट ना
 कट पूट ना ॥ पीठ जा देव जा
 लै व गं क जा सह जा ग थ

योगजामनुजाप्येवकृतजा
 मयिपिऊषतः॥ नानासूयध
 नाचान्ययोगिन्यावलवक
 ना॥ नानादभनिवासिन्या
 नस्मिन्चकुसमागतः॥ सु
 मयानुक्तयचान्यगथावा
 वलिकीकृतः॥ नृपानुग्रा
 सवसुदोगान्यपुष्टकल
 मुक्त॥ नृपानुहकुमका
 मानवा॥ नृपानुददकुम॥
 जांजांनृदृष्टाहा॥ ॐ द
 वलिंगदूरस्थाहा॥ ॐ प
 यागमदिदेयस्थादुकादि
 सेनदेखासिगागमदिले
 नयेथावेकास्थादिमाद
 काये ॐ दवलिंगदूरस्था
 हा॥ ॐ जसद्वयीभय
 जीभनिद्यापधानमव

चादेययदुग्मदाहाःसर्वादिगा
 मसंकिताः॥ ॐ दवलिंगदूरस्था
 हा॥ ॐ जसमसमनुगी॥ ॐ मि
 सनपी॥ ॐ ययी॥ ॐ दवायदंगस
 दाहदिव्यसिद्धिसमयचवपाइकी
 पूजयामि॥ ॐ दवलिंगदूरस्था
 ॥ समयवलिंग॥ ॐ जउकात्रकंचय
 लिंचिद्रुसर्वददयायपाइकी
 पूजयामि॥ ॐ दवलिंगदूरस्था
 हा॥ ॥ यजमानसाधुसुदव
 गासुपीगिकामनयाभीवेपुदवी
 सगलभवनलयसुदवगाये
 पुगिवासिकहमजागीपुषावम
 हलपूजावलिंगदूरस्थभक्तिवृत्त
 नृममनदूरदृष्टाहा॥ ॥
 ॐ गितवलिपुदानी॥ हलपुदानी
 हा॥ ॥ यनचननादिपूजायाय
 ॥ ॐ य॥ दीप॥ समयनेयसा॥ ॐ
 लयकानिगम्यादिकुसा॥ ॥
 मयहाहा॥ ॥ मृतकसिद्धिलुकी

[illegible][illegible]

15

10

5

10

15

20

विन्दुमध्यगतं दं विन्दुटिनं चार्द्धं
 चन्द्रकें। गुणात्रकलिका तासंज्ञा
 दंशकावलमिनि। उमाईहृदं
 ग्लोमेनिद्वादशादिन्यवसंभू
 न्यं न्याननावस्तु हं सारथ्यप्र
 लोधात्रिलो। लम्बाख्यपत्रमंदवी
 दक्षिणं कुरुगमिनी। नासाग्र
 गुममूलीरुमध्यमूयप्रवाहि
 नि। हृत्पत्रयत्रमानन्दगलमूत्रि
 व्यतस्त्रिगं। नादधलिकसंघृष्ट
 गुल्लोष्टकसमन्विता। स्तूलसूत्र
 त्वसंघृष्टधर्माधर्मयूटद्वय
 कार्याकात्रलकं कुरुप्रिष्ठानना
 दविगुहं। यत्रायत्रयत्रयुद्धये
 नन्योभयधर्मधुरं। सर्ववर्ध
 त्रीदविगुहं नन्विनिविगुहं ॥
 गक्तिमूलमहावृहविन्दुवोके
 समन्विता। नूयत्रीनमहाकाय
 संसृतार्धवगात्रिसि। ऊयाच
 विजयाचैव ऊयनीचायत्राजि
 गा। उम्भूतवी ऊमध्यस्तनमसं

पायमाचनि। वन्धमाककरीद वि
 धादशान्नववस्त्रिगं। रुदिनीभ
 किमूलनमहावृहसमन्विता ॥ ७
 मलीया मलीलोत्रीमायायनपु वा
 हिनी। स्वच्छन्दयेनवीदविमकुल
 न्मभूतयेनवी। र्थचायवर्धनूयस्का
 ह्वयत्रुडाः प्रकीर्तिताः ॥ नूयमाख्य
 नूयवृध। पुनमस्तुनसेनवी। दंश
 कटविद्युजिह्वागात्रकादिरुयान
 नानमासिदवदवमिन्नूधात्रधात्र
 नूयिलो। कालामूखीयगवगीउमा
 दवीनमाफुत ॥ यागिनीचम्रियाद
 विलोत्रीतवीसत्रस्वगी। हंसस्वना
 ईरादविगुहमूलोभकिंमालिनि
 ॥ कुरुकीमुगमदविद्वर्गाकाया
 यलीमिवा। निर्यक्षिनासमारवा
 गात्रकाचैकादगायत्रा ॥ वृद्धीमा
 ह्वयत्रीचैवकीमात्रीचैववीमथ
 वात्राहीचैवमाहृदं। चाभूतस्व
 रुयानना ॥ यागमिर्त्यदिदवमि
 कृताकविस्त्रिगं। नूयचैवतु

20

15

10

5

२०

आलनर्या याम्प नैर्मय वा नूली ॥
 वायवा चैव कोव नी ॥ नैमम
 दाहता ॥ उको द वमुयो मूर्ति व
 अविष्मह ध्वजा ॥ नूका प्रहुर
 वदुष्मा उको प्रविष्म नू चमा म
 का प्रहुर ॥ नूकः समया द वि
 नभा मुता ॥ नूक यम क न नाल
 पय नाल स कर्त्तु क ॥ नूक म
 महाद विष्म नू यी न भा मुता ॥
 प्रयाग व नू कोला नू दह मा
 जय निका ॥ वति गे को मु क
 वदवी का र्त्तु चारु क ॥ नूमि ता
 ल नू नू लु को ध उ नू क र्त्तु
 वः क नाली ली व ल ॥ नू व म हा
 नू व व चारु धा ॥ नू काली उ
 मादवी द व ह गि न भा मुता ॥ न
 ड काली महाद वि च म मू लु र
 या व ह ॥ महा कृष्ण महा धा नै
 नम म म कि नू यि ली ॥ नू क वः स
 ति लो हा नू द याले व क नू ध म
 ह नार्थि ना महा मा य नू न दि द

मि व दि गुं य ह्नि दं य ० नू क र्त्तु म
 ध्व चैव मान वः ॥ प्रा प्रा ति वि नि ग
 का मान मू ली र व ति व ल र ॥ प्रा
 य न य न म ह नै नि र्वा ली प न म
 य दी ॥ ॥ नू ति ॥ नि व धा कि स म
 न ल म हा मा य ली र म मा क म ॥
 द मा क ति ॥ नू ग न धा दि ॥
 म लु व वि स र्त्तु ॥ ॥ नू नू का
 नू क र्त्तु व नि मू र्त्ति र्त्तु ग ती ॥ नू ल
 ध्व ती वा स व ॥ नू ग ती ग ग ल म
 य मा र्त्तु व ती नि ल ध्व ती द दि
 ल ॥ नू ना ग म य व ल ध्व ती व ल
 ग ल वा नू ल्ध दि म य का मी वा
 मी य ल मा मि वि ष्ण र्त्तु न ती द र्त्तु
 ध्व ती सि धि दी ॥ ॥ नू ली
 वी दी ॥ नू नू ध्व र्त्तु ग ती ॥ नू ल
 वि ष्ण र्त्तु का र्त्तु क य ॥ ॥ थ म ध्व
 का र्त्तु न दि न द व ज्ञा य र्त्तु क द
 दि ली का य क ॥ म गु ली मी ह नी
 वि स र्त्तु न य य द व यो न म गु
 ली मी ह नी का य क ॥ थ का र्त्तु न
 वा क र्त्तु का य ॥ सि नू नू क का य

॥ वयं नमः ॥ धनं नमः ॥
 ॥ वायुसंहर्थं नमः ॥
 मूढममु॥ मुमु॥ कागादृष्य
 दाहसकमलमुखायादवयव
 ग्निलिप्तं वायुव्याघ्रादिनादीभ
 क्षिमकेलकलाविन्दुनादाईह
 टं॥ निजगंगामधुनामज्जयन
 मज्जलागं नवाप्रमुहः वाया
 दधानवासासकलेरयहजार
 नवः श्रीकृष्णः ॥ ॥ चन्दनी ॥ मुं
 चन्दनं लपितं यत्पवित्रीयापना
 मनी॥ नयदाहतनिर्गलक्षीवम
 ग्निसर्वदा ॥ ॥ सिन्दूर ॥ मुं सि
 द्धुनी श्रीमत्सोराग्यं वशीकृतं
 मूढमं॥ संग्रामं जयमाप्तागिसर्व
 सम्यक् दायकं ॥ ॥ माहनी ॥ मुं
 काष्ठीनक्षत्रविद्वन्माहनीक
 कुलपुत्री॥ गृहालवीनयागसा
 कर्तृपावनमानमः ॥ ॥ सगुण ॥
 मुंसिद्धार्थं दधियावर्कसूविमल
 दम्बचपुल्लदिकः ॥ ॥ स्वर्ग

सूर्यसूयललितालाग्राचनः
 श्रीकृष्णं विप्रादेदविदः प्रसा
 तसमयं कंचनीवीहयाद
 र्वायितिलकन्दुनासममिताः क
 वं कुतमसुली ॥ ॥ धनं नमः ॥
 पूजादिकि॥ दानं॥ मिमार्थं का
 छिनीनादिमसिन्दुनकायाभि
 हर्तसिन्धुना॥ स्वामिनादीध
 जीविनः ॥ धनसन्तानकामाय
 सिन्दुनागाहनमूढमं ॥ ॥ सक
 र्मधुनकाउ॥ सिन्दुनयायसत्या
 नतयाउ॥ मिमार्थं काछिनीसवि
 यं ॥ धनं लिप्यं काछिपुगिसमय
 प्रामन ॥ ॥ वयं नमः ॥ काका
 यश्रीवादि॥ देवताया॥ ॥
 नविय ॥ ॥ न्यास ॥ वलिधमः ॥
 यजमानसूर्यसादि॥ वाक ॥
 कर्तकर्मलः सादि॥ लक्ष्मीसूर्य
 याधानिमः ॥ पूजा ॥ ॥ ॥
 देवाः यतिवाचिकं मज्जगीय
 व्यावनाहनपूजाविधिसमा

15

10

5

दिगम्बर आसना

